International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org August- 2015, Volume-2, Issue-4 Email- editor@ijesrr.org

वैश्वीकरण– भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव

[1]डॉ0धर्मवीर महाजन, [2]प्रभावती
[1]शोध निर्देशक, [2]शोधार्थी समाजशास्त्र
सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय
राय–भोई, जोरवाट, मेघालय

प्रत्येक देश का अन्य देशों के साथ वस्तु सेवा पूँजी एवं बौद्धिक सम्पदा का अप्रतिबन्धित आदान–प्रदान ही वैश्वीकरण कहलाता है। वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग मूलतः आर्थिक सन्दर्भ में किया जाता है। इस दृष्टि से भूमण्डलीकरण मुक्त बाजार की स्थिति में विश्व की अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण की प्रक्रिया है, बाजार में व्यापार एवं पूँजी का मुक्त प्रवाह है। अतएव वैश्वीकरण की पहचान नई विश्व व्यापार तथा व्यावसायिक बाजारों के खुलने से है। वैश्वीकरण एवं वैज्ञानिक प्रगति के फलस्वरूप सूचना के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए, जिसमें पत्र–पत्रिकाओं से आगे बढ़कर टेलीफोन, इण्टरनेट, फैक्स आदि के माध्यमों ने आज प्रदेश–देश ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को एक कर दिया है।

संचार माध्यम के साथ–साथ यातायात के साधनों में भी तीव्रगति के परिवर्तन से व्यापार के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। फलस्वरूप एक देश से दूसरे देश में मुक्त व्यापार को प्रोत्साहन मिल रहा है। जिसके परिणामस्वरूप वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया से हमारे यहाँ आर्थिक सुधारों के साथ ही आज वैश्वीकरण के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव से प्रायः हर व्यक्ति प्रभावित है क्योंकि इसके सन्दर्भ में उपलब्ध संकेतक जैसे भारत में करोड़पति की संख्या का बढ़ना, विश्व के सर्वाधिक धनाढ्य व्यक्तियों में भारतवासी एवं भारतवासियों की अपनी जगह बनाना आदि वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभावों को ही दर्शाते हैं परन्तु इसके अतिरिक्त वैश्वीकरण के कुछ सामाजिक, सांस्कृतिक प्रभाव भी दृश्यमान हो रहे हैं जो कि हमें विचार करने पर मजबूर करते हैं, जैसे बिजली, पानी के लिए लम्बी लाइनें, महँगाई की बढ़ती हुई दरें, चरमराती आवास व्यवस्था निरन्तर नालों में बदलती जा रही नदियों एवं जलस्रोत, कारखानों के बढ़ते प्रदूषण, ग्रामीण क्षेत्रों में निरन्तर कुटीर उद्योगों का ह्रास आदि। इसके अतिरिक्त इसने आज हमारी संस्कृति को भी बुरी तरह प्रभावित किया है जिनका स्पष्ट प्रभाव भारतीय समाज में सहज ही देखा जा सकता है। जैसे–पारिवारिक विघटन की बढ़ती दरें। व्यावहारिक प्रतिमानों में वृद्धि एवं मनोरंजन सम्बन्धी मर्यादाओं में भी आ रहा है परिवर्तन।

वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभाव से तो हर आम आदमी परिचित ही है क्योंकि इसके कुछ मोटे–मोटे संकेतक उपलब्ध हैं। वैसे भारत में करोड़पतियों की संख्या का बढ़ना विश्व के सर्वाधिक धनाढ्य व्यक्तियों में भारतवासियों एवं भारतवासियों की अपनी जगह बनाना आदि। यह सब हर्ष प्रदान करने वाली सूचनायें हैं। लेकिन इनसे अलग भी कुछ दृश्य हैं जो मन्थन करने पर मजबूर करते हैं जैसे– बिजली पानी के लिए लगातार लम्बी कतारें, महँगाई, चरमराती आवास व्यवस्था, नालों में बदलती नदियाँ कारखानों के बढ़ते प्रदूषण, ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग का नष्ट होना इत्यादि। इन सबकी मुख्य वजह यह है कि वैश्वीकरण से हम वहीं पा सकते हैं जो तथाकथित विकसित देश हमें देना चाहते हैं। इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि आज जिन देशों को सुपर विकसित व समृद्ध कहा जाता है वे ही दुनिया के पूर्व साम्राज्यवादी शासक रहे हैं।

जुलाई 2005 में जारी संयुक्त विकास कार्यक्रम की एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 5 वर्षों के दौरान समृद्ध राष्ट्रों की औसत आय और सैन्य खर्चों में जबरदस्त उछाल आया है। जबकि गरीब देशों को मिलने वाली विदेशी सहायता में गिरावट दर्ज की गयी है। रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका, जापान, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और कनाड़ा में 1990 से 2004 के बीच प्रति व्यक्ति आय में 7835 अमेरिकी डॉलर की कर वृद्धि हुई है। जहाँ प्रति व्यक्ति सैन्य व्यय में 379 डालर की वृद्धि हुई है। उल्लेखनीय है कि इसी अवधि में अमेरिका ने दो–दो बार युद्ध और अफगानिस्तान पर चढ़ाई की। यहाँ पर यह बात बता देना भी आवश्यक है कि अमीर देशों ने यह तय किया है कि वे 2015 तक अपनी राष्ट्रीय आय में से विदेशी सहायता का प्रतिशत 0.7 तब बढ़ा लेंगे। लकिन इन देशों ने अगर अपनी आय एवं व्यय की दिशा को तय नहीं किया तो वे अपनी सहायता देने के लक्ष्य को पूरा नहीं कर पायेंगे। वैश्वीकरण का समूचा तन्त्र विकसित देशों के हाथों में है। इन्हें पहली दुनिया का देश कहा जाता है। वैश्वीकरण की नीतियों को लागू करने का स्रोत तीसरी दुनिया के देश हैं। जिन्हें अविकसित देश कहा जा सकता है। वर्ष 2005 की विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 20 समृद्ध देशों की सूची में अमेरिका शिखर पर है। इसके बाद जर्मनी, रूस, नीदरलैण्ड, स्विटजरलैण्ड, स्वीडन, तुर्की का स्थान है। लेकिन जो ध्यान देने की बात यह है कि इन 20 समृद्ध देशों में एक भी अफ्रीकी देश नहीं है। चीन भारत रूस जैसे देशों को छोड़कर शेष प्रथम विश्व यूरो अमेरिकी देश हैं इन देशों की खासियत यह है कि वे प्रथम एवं द्वितीय युद्ध के सूत्रधार रहे हैं। ऐसे ही धन पिपासु, युद्ध पिपासु, उपनिवेश पिपासू के कारण आजकल की तथाकथित तीसरी दुनिया का निर्माण हुआ। आज यह दुनिया पिछड़ेपन, निर्धनता, अशिक्षा, अज्ञानता, अन्धविश्वास, शोषण, हताशा, निराशा, मध्ययुगीन सामन्ती प्रवृत्तियों आदि का पर्याय मानी जाती है। हालांकि कोई न कोई विशेष वजह रही होगी कि इस दुनिया में एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका के ही अधिकांश राष्ट्र समाए हुए हैं। दो–दो विश्व युद्धों की मार झेलने के बावजूद पश्चिम का कोई भी राष्ट्र तीसरी दुनिया के देशों की ओर नहीं खिसका है। वह पहले विश्व में जमा है। इन सबसे एक अलग श्रेणी तीसरी दुनिया के देशों की है। ये वे देश है जहाँ कभी साम्यवादी समाज व्यवस्था रह चुकी है। और लोगों के बीच काफी हद तक समतावादी सम्बन्ध रहे हैं। लोगों के जीवन की बुनियादी जरूरतें पूरी होती रही है लेकिन दूसरी दुनिया के देशों की स्थिति शेष दोनों दुनिया के देशों से

सर्वथा भिन्न रही है और आज भी भिन्न है। भूमण्डलीकरण के कारण तीसरी दुनिया के देशों में नए प्रकार के सामाजिक तनाव भी पैदा होने लगे हैं। एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका या लैटिन अमेरिका के देशों को विभिन्न स्तरों पर कई प्रकार के सामाजिक दबावों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का ऐसा मानना है कि पिछड़े व विकासशील देशों में आर्थिक व सामाजिक विषमता गहराने लगी है। इससे कई देशों में विस्फोटक स्थिति पैदा हो गयी है।

वैश्वीकरण के सम्बन्ध में यूनीसेफ ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि पिछड़े देशों में बच्चों की दयनीय स्थिति भविष्य में हिसांत्मक तनावों का कारण बन सकती है। यूनीसेफ का कहना है कि विकासशील देशों में 6.4 करोड़ बच्चों के पास पर्याप्त बसेरा नहीं है। 50 करोड़ बच्चे स्वच्छता से वंचित है। 40 करोड़ बच्चों के लिए स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं। 14 करोड़ बच्चे कभी विद्यालय ही नहीं गये हैं। और 9 करोड़ बच्चे बुरी तरह से अन्न से वंचित हैं। इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र आवास रिपोर्ट ने निष्कर्ष निकाला है कि तीसरी दुनिया में दयनीय आवास स्थिति के लिए वैश्वीकरण और नवउदार आर्थिक नीतियॉ जिम्मेदार हैं। अर्न्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन ने इन आर्थिक नीतियों को तीसरी दुनिया के गरीब देशों पर थोपा जा रहा है। इन नीतियों के कारण गरीब देशों में गॉवों से शहरों की ओर लोगों का पलायन लगातार बढ़ता जा रहा है। क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्रों को निजीकरण ग्रामीण रोजगार के बढ़ते अवसर या छिनती घरेलू जमीन, सब्सिडी को हटाना जैसे कारक पलायन के लिए जिम्मेदार हैं। रिपोर्ट के अनुसार यह भी निष्कर्ष निकलता है कि वैश्वीकरण के लाभ शहरी क्षेत्रों के झुग्गी–झोपड़ियों के निवासियों तक नहीं पहुॅच सका है। रिपोर्ट का ऑकलन है कि 2015 तक तीसरी दुनिया में ढ़ाका, मुम्बई और दिल्ली विश्व की सबसे अधिक पॉच आबादी वाले शहरों में होंगे। वैसे अकेले एशिया में 267 से अधिक ऐसे शहर होंगे जिनकी आबादी 10 लाख से अधिक होगी। विश्व बाजार के लिए ये शहर वस्तु उत्पादन केन्द्र की भूमिका निभायेंगे। तीसरी दुनिया के देशों के तीव्र गति से हो रहे शहरीकरण के कारण आवास, परिवहन, रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रदूषण, पानी, कानून व्यवस्था जैसी समस्यायें भी उतनी ही तेजी से पैदा हो रही हैं। नगरों और महानगरों में अपराध बढ़ते जा रहे हैं और गन्दी बस्तियों का लम्पटीकरण हो रहा है। जीव गुणवत्ता प्रभावित होती जा रही है। इस सन्दर्भ में विशेषज्ञों का मानना है कि आज तीसरी दुनिया उस मोड़ पर खड़ी है जहॉ पहली दुनिया अर्थात् समृद्ध देश 100 वर्ष पहले थे। इसका अर्थ है कि आज भी दोनों देशों के बीच 100 वर्ष का अन्तर है। यही वजह है कि 90 के दशक से लेकर अब तक एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के गरीब मे शहरी गन्दी–बस्तियों की आबादी में एक–तिहाई की वृद्धि हुई है। संयुक्त राष्ट्र का ऑकलन है कि यदि यही रफ्तार जारी रही तो 30 वर्षों से लगभग 2 अरब लोग गन्दी बस्तियों में रहने लगेंगे। जाहिर है यह सब तीसरी दुनिया के देशों में होगा। इस सम्भावित स्थिति से किस प्रकार के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संकट पैदा हो सकते हैं, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। क्योंकि सर्वप्रथम यह स्थिति तीसरी दुनिया के किसी भी देश के लिए राजनीतिक स्थिरता मजबूत नहीं होने देगी। इन देशों की सरकारें अपना हर निर्णय समृद्ध देशों के दबाव में करेंगी। दूसरी दुनिया के कुछ एशियायी देश, जिन्हें एशिया टाइगर घोषित किया गया था पहले ही प्रथम विश्व के देशों के द्वारपालक की भूमिका निभा रहे हैं।

विश्व बैंक द्वारा जारी ताजा विश्व विकास रिपोर्ट में स्वीकार किया गया है कि आठवें दशक में भारत व चीन आर्थिक प्रगति तक असमानता निरन्तर गहराती जा रही है। बैंक इस तथ्य को स्वीकार करने के लिए विवश है कि शायद यही वजह है कि अमेरिका में एक वर्ष से कम के बच्चों की मृत्यु दर 7 प्रति हजार है जबकि माली में यही दर 126 है। वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण का प्रमुख वाहक विश्व बैंक यह भी स्वीकार करता है कि एशिया में कम से कम 6 करोड़ बच्चियॉ गायब हैं। इसका प्रमुख कारण अभिभावकों का पूर्वाग्रह पूर्ण व्यवहार, बच्चियों की हत्या एवं उपेक्षा है। इसी प्रकार विश्व का 99 प्रतिशत मातृत्व मृत्यु विकासशील देशों में होती है जिसमें से 95 प्रतिशत मृत्यु अफ्रीका व एशिया में होती हैं। तीसरी दुनिया के दक्षिण एशिया, पश्चिम और मध्य अफ्रीका में सबसे अधिक बाल विवाह होते हैं। क्योंकि इन देशों की लड़कियों को आर्थिक बोध समझाा जाता है। बांग्लादेश, नाइजर, कांगो, अफगानिस्तान, भारत तथा नाइजीरिया में बाल विवाह दर काफी अधिक है।

यह भी एक बिडम्बना ही है कि पिछले डेढ़ दशकों से वैश्वीकरण की प्रक्रिया चल रही है लेकिन बालश्रम में कोई कमी नहीं आयी है। तीसरी दुनिया के देशों में बड़े पैमाने पर बालश्रम का बर्बरतापूर्वक दोहन किया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2002 में विश्वभर में लगभग 22 करोड़ से अधिक बाल श्रमिक थे। यह स्वाभाविक है कि तीसरी दुनिया के गरीब देशों में ही इनकी सबसे अधिक आबादी है। अतः समृद्धि के समानान्तर निर्धनता की मोटी रेखायें इस बात की जीती–जागती तस्वीरें है कि बाजार सुधार का लाभ सामान्यजन तक नहीं पहुॅचा। तीसरी दुनिया के अभिजात वर्ग ने ही इन लाभों को हर ढंग से निचोड़ा है। यह देखकर विश्व बैंक ने अपनी रणनीति बदली। तीन वर्ष पहले सामान्य जन राजनीतिक सशक्तीकरण और सामाजिक सुधार पर इसने फोकस किया। क्योंकि जब तक परम्परागत उत्पीड़क सामाजिक सम्बन्धों की संरचना में आधार पर बदलाव नहीं आता है तब तक मूल उत्पादक वर्ग की क्रय शक्ति नहीं बढ़ेगी। इसके लिए सामान्य जन का राजनीतिक सशक्तीकरण भी जरूरी है। अर्थात् लोकतान्त्रिक संस्थाओं व नीति निर्णय प्रक्रियाओं में दलित, आदिवासी, पिछड़े और अन्य कमजोर वर्गों की भागीदारी प्रोत्साहन सुनिश्चित करना।

आवश्यकता इस बात की भी है कि आर्थिक व राजनीतिक परिदृश्य को जनोन्मुख, विकासोन्मुख बनाया जायं। यह तभी सम्भव है तब वैकल्पिक जनशक्तियॉ उभरें। जनसशक्तिकरण द्वार–द्वार तक पहुॅचे। सत्ता के विकेन्द्रीकरण की धारायें गॉव से होकर जायं। वैश्वीकरण के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभावों के सम्बन्ध में जनता को जागरूक बनाया जायं। वैश्वीकरण के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभावों के सम्बन्ध में जनता को जागरूक बनाया जायं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने अपने एक साक्षात्कार में इस तथ्य को स्वीकार किया है कि पिछड़े देशों के सन्दर्भ में वैश्वीकरण का लाभ सभी लोगों तक नहीं पहुॅचा है। उन्होंने यह भी माना है कि अकेले वैश्विक आर्थिक व्यवस्था

बढ़ती गरीबी व असमानता की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती। अतः वैश्विक सामाजिक कार्यवाही को समानान्तर स्तर पैदा किए बगैर वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था की कल्पना करना अरास्तविक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. रिपोर्टः संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम– जुलाई–2015।
2. रिपोर्टः विश्व बैंक वर्ष–2014।
3. बामादास, ए0पी0 'ग्लोबलाइजेशन एण्ड रूरल सोशल स्ट्रक्चर' वाल्यूम– 4, 1999।
4. जैन, आर0बी0 'पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन इण्डिया' क्रॉनिकल– मार्च–2015।
5. गैरोला, वाचस्पति– भारतीय संस्कृति एवं कला–1973।
6. ओशोटाइम्स इण्टरनेशनल अंक, दिसम्बर–2011।